International Journal of Sanskrit Research 2015; 1(5): 01-03

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2015; 1(5): 01-03
© 2015 IJSR
www.sanskritjournal.com
Received: 02-05-2015
Accepted: 05-06-2015

विश्वेश कुमार मिश्र
जे0आर 0 एफ
गोरखपुर

Correspondence
विश्वेश कुमार मिश्र
गोरखपुर

घुमक्कड़ी की महत्ता

विश्वेश कुमार मिश्र
जे0आर 0 एफ

सारांश (Abstract) – मनुष्य के लिए घूमना अत्यन्त आवश्यक है। घूमने सें व्यक्ति को समाज की संस्कृति एवं सभ्यता के ज्ञान के साथ उसका आत्म–परिष्कार भी होता है। पर्यटक और घुमक्कड तथा यात्री तीन शब्द प्रचलित हैं। वस्तुतः तीनों के महत्व का परीक्षण अलग–अलग किया जा सकता है। जब कोई यात्री/घुमक्कड/पर्यटक जब आखों देखा हाल लिखकर समाज के सम्मुख रखता है, तब उसके द्वारा दी गयी सूचना की महत्ता का मूल्यांकन नहीं हो पाता, उसकी उपयोगिता की सीमा भी निर्धारित नहीं हो पाती। घुमक्कड़ से बढ़कर समाज का हितैषी होना दुष्कर है। इन तथ्यों पर बहुधा साहित्य भी रचे हैं। संस्कृत, हिन्दी, अँग्रेजी आदि विधाओं में घुमक्कडी का महत्व प्राप्त होता है।

कूट शब्द – पर्यटक, घुमक्कड, यात्री, समाज, संस्कृति ,मुकुटित ।

प्रस्तावना
राहुल सांकृत्यायन जी अपनी रचना **''अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा**'' में लिखते हैं कि ''मेरे समाज में दुनिया की सर्वश्रेष्ठ वस्तु है **घुमक्कड़ी।** घुमक्कड़ से बढ़कर व्यक्ति और समाज का कोई हितकारी नही हो सकता। कहा जाता है कि ब्रह्मा को सृष्टि करने के लिए न प्रत्यक्ष प्रमाण सहायक हो सकता है न अनुमान ही। हाँ दुनिया के कारण की बात तो निश्चय ही न ब्रह्मा कें ऊपर है न विष्णु और न शंकर ही के ऊपर है। दुनिया दुःख मे हों चाहे सुख मे सभी यदि सहारा पाते हैं तो घुमक्कड़ो की ही ओर से।''

घुमक्कड़ी के महत्व का वर्णन करते हुए सांकृत्यायन जी लिखते हैं – ''मैं मानता हूँ कि पुस्तके भी कुछ–कुछ घुमक्कड़ी का रस प्रदान करती हैं लेकिन जिस तरह फोटो देखकर आप हिमालय के देवदारू के गहन वनों और खेत, हिम – मुकुटित शिखरों के सौन्दर्य और उनके रूप, उनकी गन्ध का अनुभव नहीं कर सकते उसी तरह यात्रा कथाओं से आपको उस बूँद से भी भेंट नही हो सकती जो कि एक घुमक्कड़ को प्राप्त होती है। अधिक से अधिक यात्रा–पाठको के लिए यही कहा जा सकता है कि दूसरे धन्धों की अपेक्षा उन्हें साथ ही ऐसी प्रेरणा भी मिल सकती है जो स्थायी नहीं तो कुछ दिनों के लिए तो उन्हें घुमक्कड़ बना ही सकती है। घुमक्कड़ क्यों दुनिया की सर्वश्रेष्ठ विभूति है ? इसीलिए कि उसी ने आज की दुनिया को बनाया है।''

यात्रा साहित्य, साहित्य की एक रोचक तथा मनोरंजन प्रधान विधा है। इसमे लेखक विशेष स्थलों की यात्रा का सरस तथा सुन्दर वर्णन इस दृष्टि से करता है कि जो पाठक उन स्थलों की यात्रा करने मे समर्थ न हों वे उसका मानसिक आनंद उठा सकें और घर बैठे ही उन स्थलों के प्राकृतिक दृश्यों, वहाँ के निवासियों के आचार – विचार, खान–पान रहन–सहन आदि से परिचित हों सकें। इस विधा का यह लक्ष्य रहता है कि लेखक अपनी यात्रा मे प्राप्त किये हुए आनंद तथा ज्ञान पाठकों तक पहुंचा सके इसकी सफलता लेखक के स्वरूप, निरीक्षण तथा उसकी वर्णन–शैली के सौष्ठव एवं सौन्दर्य पर अधिक निर्भर रहती है। इसमें लेखक अपनी यात्रा की कठिनाई, सम्बन्धों तथा उपलब्धियों का रोचक विवरण पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता है।इस प्रसंग को हम स्थान पर वर्णिततथ्यों के माध्यम से इस प्रकार समझ सकते हैं –

अजन्ता की गुफाएँ
महाराष्ट्र राज्य के औरंगाबाद से 106 किलोमीटर की दूरी पर स्थित फरदापुर गाँव के समीप अजन्ता कें कला–मंडप अवस्थित हैं। इलाहाबाद से मुम्बई जाने वाली बड़ी लाइन मे एक स्टेशन आता है – जलगाँवं। जलगाँव से अजन्ता की दूरी 59 किलोमीटर है। प्रायः तीन सौ फुट, ऊँचा वर्तुलाकार पर्वत के उत्संग मे 29 गुफाएँ उत्कीर्ण हैं। नीचे बागुरा नदी बहती है। ये गुफाएँ अपनी शिल्प संपत्ति विशेषतः चित्रकला के लिये विख्यात हैं।

डॉ0 भगवतशरण उपाध्याय नें अपने लेख 'अजन्ता' मे अजन्ता की गुफाओं की यात्रा का सजीव चित्रण एवं वहाँ कें लोंमहर्षक दृश्य का उत्कृष्ट अंकन कुछ इस प्रकार किया है – ''अजन्ता गाँव से थोड़ी ही दूर पर पहाड़ों के पैरों मे साँप–सी लोंटती बाधुर नदी कमान की तरह मुड़ गयी है। वहीं पर्वत का सिलसिला एकाएक अर्द्धचन्द्राकार हो गया है कोई दो सौ पचास फुट ऊँचा हरे वनो के बीच मंच पर मंच की तरह उठते पहाड़ों का यह सिलसिला हमारे पुरखों कों भा गया है। और उन्होने उसे खोदकर भवनों–महलो से भर दिया है, सोचिये जरा ठोस पहाड़ की चट्टानें और कमजोर इन्सान का मेल जोल हुआ तो पर्वत का हिमार्द्रकता चली गयी और वहाँ एक–से–एक बरामदे, हाल और मन्दिर बनते चले गये।'' अजन्ता में चित्रकला, मूर्तिकला और वास्तुकला का अद्वितीय संगम है। अजन्ता हमारी प्राचीन सभ्यताएँ, धर्म, दर्शन, कला संस्कृति और साधना के चरम उत्कर्ष की मूक साक्षी है।अजन्ता के चित्र और मूर्तियाँ बुद्ध कें जीवन से सम्बद्ध हैं। ये सभी गुफाएँ गुप्तकालीन हैं। अजन्ता शैली के चित्रण–विधान फ्रेसको पेन्टिंग हैं। चित्रों के साथ–साथ यहाँ गुप्तकालीन मूर्तियाँ भी हैं। अजन्ता गुफाओं की कीर्ति उनके चित्रो की विशिष्ट समृद्धि सुन्दरता पर आश्रित हैं।ये भित्ति चित्र खुरदरे पत्थर पर धवलित भूमि तैयार करके धातुराग या गेरू की वर्तिका या लेखनी से जनिका रेखा खींकर लिखे गए थे। तत्पश्चात् रक्त, पीत, नील, हरित और कृष्ण वर्णों से इनके रंग भरे गए। गुफा 10 में हंदत की कथा चित्रित है। इन गुफाओं के विशाल मंडप जो 50 फुट से अधिक लम्बे–चौड़े हैं उनकी छतें, स्तम्भ, भित्तियाँ आदि सर्वांग चित्रों से मंडित थी। छतों मे शतपत्र और सहस्त्रपत्र कमलों के बड़े–बड़े फूल शोभा के विशिष्ट उदाहरण हैं।अजन्ता के भित्तिचित्र स्वर्णयुग के सांस्कृतिक जीवन के प्रतिनिधि चित्र हैं।

डॉ0 भगवतशरण उपाध्याय नें अजन्ता की दीवारों बन्दरों, हाथियों और हिरनो तथा राजा और कंगले, विलासी और भिक्षु, नर और नारी, मनुष्य और पशु के चित्रों के माध्यम से जीवन संघर्ष का एक हृदयस्पर्शी चित्र उपस्थित किया है–''कितना जीवन बरस पड़ा है इन दीवारों पर जैसें फसाने अजायब का भण्डार खुल पड़ा हो। कहानी से कहानी टकराती चली गयी है। बन्दरों की कहानी, हाथियों की कहानी, हिरनो की कहानी। कहानी क्रूरता और भय की, दया और त्याग की। जहाँ बेरहमी है, वहीं दया का भी समुद्र उमड़ पड़ा है। जहाँ पाप है वहीं क्षमा का सोता फूट पड़ा है। राजा और कंगलें, विलासी और भिक्षु नर और नारी, मनुष्य और पशु सभी कलाकारों के हाथों सिरसते चले गयें हैं। हैवान की हैवानी को इन्सान की इन्सानियत से कैसे जीता जा सकता है कोई अजन्ता मे जाकर देखे। कुछ का जीवन हजार धाराओं मे होकर बहता है। जन्म से लेकर निर्वाण तक उनके जीवन की प्रधान घटनाएँ कुछ ऐसे लिख दी गयी हैं कि आंखे अटक जाती हैं हटने का नाम नहीं लेती।''**– 'अजन्ता'**

बिहार गुहा नम्बर 1 की भित्तियों पर पद्मपाणि अवलोकितेश्वर के महान् चित्र हैं। दायें हाथ मे नील कमल धारण किए किंचित त्रिभंगी युक्त भगवान् सात्विक विचार मग्न हैं। मांएल और सुन्दर मुखारविन्द पर चिन्तन, करूणा, वैराग्य आदि के भाव सफलता पूर्वक प्रकट किये गये हैं इस चित्र के आस–पास की समस्त देव–सृष्टि मानव–सृष्टि और विचार–मग्न यशोधरा पर इन भावों का प्रभाव दर्शनीय है। इस चित्र कों देखने से ही ज्ञात होता है कि दर्शक एक ऐसी महान आत्मा के सामने खड़ा है जो विश्वकल्याण की जटिल समस्या के निराकरण में सहायक है।

पहली गुफा की दीवार (12 फुट ऊँची और आठ फुट चौड़ी) पर 'मार–विजय' (कुटिल शत्रु मार अपने विकट योद्धाओं के साथ सिद्धार्थ की तपस्या और असुरों कें आक्रमण) का चित्र अंकित है। अपनी सेना के साथ कामदेव बुद्ध को घेरे हुए हैं और उनकी तपस्या भंग करने की चेष्टा कर रहें हैं। बुद्ध के चारों ओर विकट मुख वाली डरावनी मूर्तियाँ हैं। दूसरी ओर वासनाओं को उभाड़ कर उन्हे पथ–भ्रष्ट करने वाली सुन्दर कामिनियों (नारी सुलभ हाव–भाव–कटाक्ष) के चित्र भगवान को डराने, क्रुद्ध करने, क्षुब्ध तथा लुब्ध (मोहित) कर विचलित करने मे प्रवृत्त हैं किन्तु वे सर्वदा आत्मनिरत हैं। उनकी मुद्रा मे अलौकिक शान्ति है। वे ध्यान मग्न, शान्त और अविचल हैं, मानो उनके चारों ओर कुछ हो ही नहीं रहा है। शान्त रस का इतना सुन्दर चित्रण चित्र कला के माध्यम द्वारा संसार मे अन्यत्र कहीं नहीं हुआ है। निसंदेह मार कामधातु के स्वामी हैं, परन्तु बुद्ध धर्म का स्वामी है और सब प्रकार से मार से श्रेष्ठ हैं। मार की सेना पूर्णतः पराजित हुई। बिहार गुहा–16 में बुद्ध के जीवन दृश्य नंद सुदंरी कथानक एवं दृदंत कथानक के दृश्य चित्रित हैं। पहला चित्र ''भगवान बुद्ध के गृह त्याग'' का चित्र है। गहरी रात मे भगवान बुद्ध गृहत्याग कर रहें हैं। यशोंधरा और उनके संग शिशु राहुल सोया हुआ है। पास की परिचारिकाओं पर भी निद्रा ने अपनी मोहिनी डाल रखी है। इस दृश्य पर एक निगाह डालते हुये बुद्धदेव अंकित किये गये हैं। बुद्ध की मुखमुद्रा में मोह–ममता नहीं त्याग का शान्त भाव अन्तिम विदाई प्रदर्शित करता है। यही इस कृति का रहस्य है।

गुहा 17 भित्तियों पर संप्तमानुषी बुद्ध, भव चक्र, सिंहावलोंकन और बुद्ध के कपिलवस्तु के प्रत्यावर्तन के दृश्यों के अतिरिक्त कहीं जातक कथाओं के भी चित्र अंकित हैं। इनमे विश्वंतर जातक, शिविजातक, द्वंदजातक और हंसजातक के चित्र अपनी अगाध करूणा और अविचल धर्मनिष्ठता की अभिव्यक्ति के कारण स्थायी आकर्षण की वस्तु बने हैं। इन गुहाओं मे मनभावन आकृतियाँ अपेक्षाकृत छोटे परि की है।

अजन्ता की 17 वीं गुफा के सभी चित्र एक से एक बढ़कर हैं। ऐसा ज्ञात होता है कि बुद्ध काल के अधिक चतुर और प्रमुख कलाकारों ने इसी गुप्त में अपनी कला का प्रदर्शन किया है। इस गुप्त में माता पुत्र का एक प्रसिद्ध चित्र है। माता पुत्र (यशोधरा और राहुल) में आता अपने पुत्र को किसी के सामने साग्रह उपस्थित कर रही है और पुत्र की अंजलि प्रसार अपनी मनोरथ सिद्धि की अभिलाषा कर रहा है। सामने ही अपने दाहिने हाथ में भिक्षा–पात्र लिये हुए भगवान बुद्ध का मानव आकार से बहुत विशाल एक चित्र अंकित है। कुद्धुत्व प्राप्त करने के पश्चात् भिक्षुक के रूप में बुद्ध कपिलवस्तु में उपस्थित हुए हैं। यशोधरा उन्हें राहुल से बढ़कर और कौन–सी भिक्षा दे सकती है? यही इस चित्र का विषय है। यशोधरा के नेत्रों से श्रद्धायुक्त आत्म–त्याग के भाव भगवान बुद्ध के नेत्रों से विश्व कल्याण के निर्मित सात्विक ग्रहण का भाव टपक रहा है।

अजन्ता के भिति पित्रों की विशेषताएं

यहाँ के चित्रों की तैयारी की खुदाई के रूप रेखा बहुत जानदार, जोरदार और लोचदार है। चित्रों की महानता और विशालता, शैली की सरलता स्वाभाविकता और कल्पना भी उदारता अजन्ता की कला को महान् बताती है। दृश्य संयोजन में केन्द्रदत्व का बहुत अधिक ध्यान रखा गया है जिसका परिणाम यह होता है कि मुख्य चित्र की आरे शीघ्र ध्यान आकृष्ट में जाता है। संयोजन और रंग योजना प्रसंगनुकूल बड़ी सटीक और चिन्ता कर्षक है। संयोजन और रंग योजना रेखाकंन बिन्कुल स्वाभाविक और उन्मुख है। कला का प्रखान साधन रेखाएं ही हैं। कलाकारों की तुलिका से स्वाभाविक रूप से निकली हुई इन रेखाओं ने जड़ को चेतन बना दिया है। उनके हाथों की अंगुलियों जिह्वा से भी अधिक वाचाल हो उठी है। निर्जीव पत्थर में भी उन्होंने जान डाल दी है। अपनी गतिशील रेखाओं के द्वारा इन चित्रकारों ने आकृति के अनुसार गोलाई प्रकाश छाया का प्रभाव अभार तथा गहराई सरलता पूर्वक बिता किसी प्रयास के प्रकट किया है। हाथ की मुद्राओं आँख की चितवनों और अंगों की सोच से अधिकांश भाव व्यक्त हुए हैं।

अजन्ता की कला भाव–प्रधान है कमल–पुष्प अपने साझा रूपों में अजन्ता में प्रत्येक स्थल पर प्रयुक्त हुआ है। अजन्ता की कला में जातियों का स्थान महत्वपूर्ण है। स्त्रियों के अंग–प्रत्यंगों का बड़ा ही मनोरम चित्रण हुआ है। उनके खड़े होने का ढंग किंचित भंगिमामय एवं रोचक है। हस्त मुद्राओं का इतना सूक्ष्म और विविध चित्रण आश्चर्य चकित करता है। चित्रकार ने मुद्राओं द्वारा भाव व्यक्त करने के लिये कहीं हथेलियों को थोड़ा मोड़ दिया है तो कहीं उन्हें खोल दिया है। केश कलापों का सौन्दर्य वर्णव्यतीत है। पुरूषों के आभूषण

और मुकुटों का अलंकरण अद्भुत है।

निष्कर्ष

अनेक रूप भेदों के साथ ही प्रेम, जज्बा, हर्ष, विषाद, ह्रास, शोक, उत्साह, क्रोध, घृणा, भय, आश्चर्य, चिंता, विरक्ति, निस्संगत, शांति, जय, पराजय, राग और विराग, भावों को बड़ी खूबी से दर्शाएं हैं। यहाँ गम्भीर मार्मिकता व्याप्त है। डिजाइनों में फूल–फल तथा रेखाओं और ज्यामिति की विविध आकृतियों का स्वच्छता पूर्वक व्यवहार किया गया है। इन चित्रों की सहायता से उस युग के वस्त्र अलंकार, बाध, अस्त्र–शस्त्र, बर्तन आदि आँखों के सामने साकार हो जाते हैं, इनमें मनुष्य भी हैं। देवता भी, दानव भी। यहाँ यक्ष है किन्नर हैं गंधर्व हैं और मोहक मुद्राओं से जादू डालने वाली अप्सराएं भी हैं अजन्ता के चित्रकलाओं ने आधुनिक भारतीय चित्रकला को प्रभावित किया है। अजन्ता के चित्रों की प्रेरणा ग्रहण करके नई शैलियों का उद्भव हुआ है। यह सबकुछ यात्रा से ज्ञेय है बिना वहॉ पहुचे, साक्षात् प्रतीति के अभाव में तत्कालीन सांस्कृतिक विशेशताओं का ज्ञान नहीं हो सकता। अजन्ता की ये अभिव्यक्ति यात्रा साहित्य को प्रबल बनाती है।